तुम हो रूहानी स्वदर्शनचक्रधारी ब्राह्मण कुलभूषण और सर्वोत्तम श्रेष्ठ कुल। जैसे अग्रवाल कुल आदि होते हैं ना। ब्राह्मण कुल देवताओं से भी ऊँच है; क्योंकि बच्चों को बाप पढ़ाते हैं। ईश्वर के बने हो उनसे वर्सा लेने लिए। ईश्वर वर्सा देते हैं विश्व की बादशाही। और यह तो बच्चों को समझ(ाया) है धर्म जो स्थापन होती है पहले कुल होते हैं फिर डिनायस्टी। क्राइस्ट, बुद्ध, इब्राहिम आदि जो भी बड़े–2 हैं उनको प्रिसेप्टर(गुरू) नहीं कहा जाता है। तो यह सन्यासी उदासी तो छोटे–2 मंठ–पंथ डार–टार–टारियां आदि हैं, उनको भी गुरू नहीं कहेंगे। वह है भक्तिमार्ग वाले गुरू। सद्गति दे न सके। ऐसे भी नहीं कि वह दुगर्ति देते हैं। उनको मालूम नहीं पड़ता है। यह है ईश्वरीय सम्प्रदाय के सद्गुरू, वह है रावण सम्प्रदाय के गुरू। तुम सच्चा रास्ता बताते हो। वह है झूठा रास्ता। बाप पूछते हैं तुमको सद्गति देकर गया फिर दुगर्ति किसने दी? 5 विकार बाप कहते हैं मैंने शिवालय बनाया फिर वैश्यालय किसने बनाया? श्रीमत पर तुम भी सद्गति वाले ठहरे। तो सच्चा सद्गुरू एक ही निराकार है। बाबा कहने से वर्से की खुशबुएं आती हैं। शिव को हमेशा बाबा ही कहा जाता है, बाप कहते हैं बच्चे सुनते हो कानों से। यह नॉलेज है ना। नॉलेज में एमऑबजेक्ट चाहिए। वह यह (ल.ना.) दिखाई जाती है। कोई कहे सा. कराओ। यह कोई कराता नहीं। ड्रामा में नूँध है। ऑटोमेटिकली हो जाता है। बाप सा. कराते नहीं। जैसे भक्तिमार्ग का भी समझाया नवधा भक्ति करते

हैं तो भावना का फल मिलता है। ईश्वर फल नहीं देता। ईश्वर सद्गति देते हैं। वह सद्गति मिलती है पढ़ाई से , न कि सा. से। एमऑबजेक्ट तो है। बहुत बच्चों की दिल होती है सा. करने। भगवान करते हैं मैं सा. नहीं कराता। मैं रास्ता बताता हूं पतित से पावन होने का। सा. से फायदा तो है नहीं। मैं वह रास्ता बताता हूं जिससे कल्याण हो, फायदा हो। तुमने कब आत्मा का सा. किया जो बाप का करने चाहते हो। आत्मा खुद को ही नहीं जानती। शिवबाबा सा. वह तो शास्त्रों में है अखण्ड ज्योति है। बिन्दी का सा. करेंगे कैसे? समझ में ही नहीं आवेगा। मैं तो एक बार आता हूं। आकर रास्ता बताता हूं। तुम ऐसे पवित्र बन विश्व के मालिक बन सकते हो। बाकी सा. से कुछ नहीं होता। समझो सा. करते रहेंगे फायदा कुछ भी नहीं। हो सकता है उसमें माया की प्रवेशता हो जाये; इसलिए कब भी सा. का ख़याल नहीं करना है। यह तो स्कूल है ना। है ही सत्य नारायण की कथा। वह सभी है झूठी कथाएं। यह तो नॉलेज है। नॉलेज को कथा नहीं। नॉलेज तो सम्मुख दी जाती है। टीचर बैठ पढ़ाते हैं। चक्र का राज़ सुनाते हैं और आत्मा जो पवित्र बनी है इसके लिए कहते हैं मुझे याद करो। तुम्हारी आत्मा पवित्र हो जावेगी। आत्मा भी बिन्दी बहुत सूक्ष्म है। इन आँखों से देख न सकेंगे। सा. से विकर्म विनाश होंगे। योग से विकर्म विनाश होना है। सा. की कब भी दिल रखो नहीं। वह भी भक्तिमार्ग की ड्रामा में नूँध है। मनोकामना पूरी (हो)ती है। बाकी फायदा कुछ भी नहीं है। पढ़ाई से फायदा होती है। पढ़ाई ही टाइम लेती है। सा. तो सेकण्ड का काम है। मूल बात है आत्मा को सतोप्रधान कैसे बनावें? बाप कहते हैं मुझे याद करो तो जंक निकल जावेगी। जन्म–जन्मांतर के पाप कट जावेंगे। तुम घर जाकर फिर पहले–2 स्वर्ग में आ जावेंगे। सतोप्रधान भी बनना है। दैवी गुण भी धारण करना है। रोज़ देखो कोई को दुःख तो नहीं दिया। मैं बाबा को याद करता हूं। कोई अवज्ञा तो नहीं हुई। सभी तरफ से बुद्धियोग हटाये मामेकं याद करो। तुम्हारे विकर्म विनाश हो जावेंगे। इसमें सा. आदि (का) प्रश्न ही नहीं उठता। पढ़ाई और याद है मुख्य। ऐसी पढ़ाई में अपसेन्ट न रखना चाहिए। पढ़ाई कहां भी पहुंचाई जाती है। विलायत में भी मुरली जाती है ना। चक्र का राज़ और बाप की याद। बस। नॉलेज मिलती रहेगी। गुह्य–2 प्वाइन्ट्स मिलती रहेंगी। मुरली रोज़ पढ़नी चाहिए। जो अपसेन्ट न हो। यह है पवित्र पढ़ाई। पवित्र भी होना है, पढ़ाई भी पढ़नी है। देवताओं के आगे आस ले जाते हैं। यहां आस ले आने की दरकार ही नहीं। (कि)सको पता ही नहीं भगवान से क्या मिलेगा। भगवान आपे ही सभी कुछ देते हैं। बच्चों को सब बताते हैं। अन्दर में जो बात होगी आपे ही

रेसपॉण्ड मिल जावेगी। बाबा से कहेंगे धंधे में यह बात है, बाप कहते हैं मैं इन बातों को नहीं जानता हूं। हमारे रथ ने ही वह धंधा छोड़ दिया। यह पढ़ाई अच्छी लगी जिससे बादशाही मिलती है। बाकी और कोई सतसंग है नहीं। वह तो लतसंग है। सीढ़ी उतरनी ही है। ऊपर कोई जा न सके। दिन–प्रतिदिन उतरती कला होती जाती है। नई दुनियां पुरानी होती जाती है। बाकी सा. आदि सभी भक्तिमार्ग के हैं। जिस रूप में देखा हुआ होगा वही सा. होगा। तो बाप कहते हैं तुमको इतना अकीचार धन दिया फिर क्या किया? तुमको मालूम है कितना सॉलवेन्ट बनाया? कुबेर का खज़ाना था। हीरों के महल थे। ड्रामा अनुसार उतरे ही आये हैं। भारत सॉलवेन्ट था ना। अभी यह ग़रीब बन गये हैं। वह साहूकार हो गये। फिर रिर्टन वहां से लेते हैं। फिर हिसाब–किताब चुक्तू हो जावेगा। यह खेल है समझने का। और मेहनत भी है। इच्छा मात्रम अविद्या। बाप आपे ही आकर स्वर्ग का मालिक बनाते हैं। एमऑबजेक्ट सामने है। बाप आकर पढ़ाते हैं नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जितना निश्चयबुद्धि होकर पुरुषार्थ करेंगे। संशय बुद्धि विनश्यन्ति, निश्चय बुद्धि विजयन्ति। पूरा निश्चय हो तो खुशी का पारा चढ़े। यह बेहद का ड्रामा है। तुम ऐसे एक्टर्स हो। सतयुग में बहुत थोड़े एक्टर्स होते हैं। एक भारत खण्ड ही था। फिर आदि सनातन देवी–देवता धर्म फिर स्थापन हो रहा है। यह ड्रामा को अच्छी (त)रह समझना है। विशाल बुद्धि चाहिए। बुलाते ही हो आकर पावन बनने का रास्ता बताओ। बाप कहते हैं मैं जब आता हूं तो सभी को मुक्ति–जीवनमुक्ति देता हूं। क्राइस्ट आया। वह किसको ज्ञान देंगे जो गुरू कहे। यह है

10.4.68 4

पुरुषोत्तम संगमयुग। अच्छा, बच्चों को फिर सवेरे उठना है। यह अच्छा है। कट उतरती जावेगी। इसमें एकान्त बड़ी अच्छी चाहिए। सन्यासी भी गोरखधंधे से निकल जाते हैं। तुमको सन्यास (तो) करना नहीं है। जैसे पवित्र आये थे वैसे ही पवित्र बन जाना है। अंत मते सो गति हो जावेगी। पिछाड़ी में हिसाब–किताब सारा निकलता है। स्कॉलरशिप बहुत थोड़े लेते हैं। बच्चों को याद में स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। बाप सिर्फ़ सिखलाते हैं ऐसे (चक्रवर्ती) बनेंगे। दुनियां भी इस चक्र को नहीं जानती हैं। तुम बाप को और रचना के आदि, मध्य, अंत को जानते हो। अच्छा, बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।